BA Part-II Psy.

Pap- 3rd

परीक्षा के प्रकार
(Types of Examination).

परीक्षा के निम्नलिखित मुख्यत: तीन प्रकार हैं—

(क) मौखिक परीक्षा (Oral Examination)

(ख) लिखित परीक्षा (Written Examination)

(ग) खुली किताब परीक्षा तथा बन्द किताब परीक्षा (Open Book and closed Book Examination)

(क) मौखिक परीक्षा (Oral Examination)

मौखिक परीक्षा में विद्यार्थियों से मौखिक प्रश्न किये जाते हैं और उनके ज्ञान-उपार्जन का मूल्यांकन किया जाता है। इससे उनके अध्ययन का ज्ञान सहज रूप से हो जाता है। इसके अतिरिक्त बच्चों की सूझ-बूझ, भाषा अभिव्यक्ति तथा व्यवहारिक ज्ञान को जाँचने में सहायता मिलती है। इस प्रकार की परीक्षा के लिए न तो समय निश्चित रहता है और न कोई स्थान ही। अध्यापन के क्रम में ही शिक्षक अपने विद्यार्थियों से प्रश्न करके उनके ज्ञान की जाँच कर लेता है। शिक्षक आवश्यक समझते हैं तो अलग-अलग विद्यार्थियों से प्रश्न करके उसकी परीक्षा लेते हैं।

यह परीक्षा बहुत ही सरल है। इसके लिए न तो प्रश्न बनाने की आवश्यकता होती है और न उत्तर-पुस्तिकाओं के जाँचने की जरूरत होती है। विद्यार्थियों के दृष्टिकोण से भी यह परीक्षा बहुत ही सहज है। इसके लिए न तो अधिक तैयारी करने की आवश्यकता होती है और न कुछ लिखने की आवश्यकता होती है। इस परीक्षा का एक गुण यह भी यह है कि प्रश्न पूछते समय विद्यार्थियों के समस्त व्यक्तित्व

का प्रत्यक्ष रूप से निरीक्षण हो जाता है।

✓ मौखिक परीक्षा के कुछ गुण एवं दोष हैं। प्रमुख गुण निम्नांकित हैं :-

(i) मौखिक परीक्षा में लचीलापन (flexibility) अधिक होता है। इसमें शिक्षक प्रश्नों को किस ढंग से चाहे, पूछ सकते हैं, मौखिक परीक्षा जहाँ चाहें, शिक्षक उसका संचालन आसानी से कर लेते हैं।

(ii) मौखिक परीक्षा में छात्रों को उत्तर लिखने में लगा समय काफी बच जाता है।

(iii) शिक्षकों को भी प्रश्न निर्माण करने में लगा समय बच जाता है। इसमें प्रश्नों की गोपनीयता को बरकरार रखने के लिए शिक्षकों को अलग से कोई प्रावधान करने की जरूरत नहीं पड़ती।

(iv) इसमें शिक्षकों के उत्तर-पुस्तिका के मूल्यांकन में निहित भीषण एवं उबाऊ कार्य नहीं करना पड़ता है।

(v) छात्रों को मौखिक परीक्षा (oral examination) के लिए कोई विशेष तैयारी नहीं करनी पड़ती।

(vi) मौखिक परीक्षा में शिक्षक छात्रों के व्यक्तित्व-संबंधी गुणों को भी परख आसानी से कर लेते हैं।

✓ मौखिक परीक्षा (oral examination) के कुछ प्रमुख दोष भी हैं, जो निम्नांकित हैं—

(i) मौखिक परीक्षा में शिक्षक प्रतिछात्र कम ही समय देते हैं। कभी-कभी तो देखा गया है कि मात्र 3-4 मिनट में ही चंद प्रश्नों को पूछकर छात्र को विदा कर देते हैं। इसके संबंध में आलोचकों का मत है कि इस ढंग की परीक्षा से छात्रों के कौशल एवं ज्ञानोपार्जन का सही-सही मूल्यांकन नहीं हो पाता है।

(ii) मौखिक परीक्षा में छात्र अक्सर घबड़ा (Nervous) जाते हैं और यदि इसमें शिक्षक के पूछने का ढंग रोषपूर्ण रहा, तो परिणाम अच्छे नहीं आते हैं। ऐसी परिस्थिति में मौखिक परीक्षा बेकार साबित होती है क्यों कि इसमें छात्रों की ज्ञान एवं उपलब्धि के बारे में किसी निष्कर्ष पर पहुंचना शिक्षकों के वश की बात नहीं रह जाती है।

(iii) मौखिक परीक्षा उन छात्रों पर सम्भव नहीं की जा सकती जिसमें किसी प्रकार का भाषा-संबंधी दोष होता है। ऐसे छात्र चूंकि बोलकर प्रश्नों का उत्तर समझने योग्य भाषा में नहीं दे सकते, इस प्रकार की परीक्षा का प्रयोग उन छात्रों पर संभव नहीं है।

(iv) मौखिक परीक्षा में शिक्षकों को अपना पूर्वाग्रह (Prejudice), पक्षपात (bias) आदि दिखाने का पर्याप्त मौका मिल जाता है। अक्सर देखा गया है कि शिक्षक कुछ छात्रों से अति सरल प्रश्न पूछकर उनके उत्तरों तथाकथित ढंग से खुश होकर उन्हें अधिक अंक दे देते हैं तथा

कुछ छात्रों से, विशेषकर उन छात्रों से जिनके प्रति उनकी मनोवृत्ति नकारात्मक (Negative) रही है, कठिन प्रश्न पूछते हैं और सही उत्तर मिलने पर भी वे खुश नहीं होते हैं और उन्हें अक्सर निम्न अंक दे देते हैं। स्पष्ट है कि मौखिक परीक्षा में शिक्षकों को मनमानी करने का पर्याप्त मौका मिल जाता है। इससे स्पष्ट हो जाता है कि मौखिक परीक्षा प्रणाली यथार्थ एवं विश्वसनीय नहीं है।